

पद १३४

(रागः पिलु जिल्हा- तालः धुमाळी)

माझा चेतन प्राण जिवलग ग। आधिं आधिं डोळा झळकतो ग।
मन प्राणेंद्रिय जीवन ग। मी असे दिसे प्रिय जगत्स्फोरक
जगदात्मा। हा प्राणेश्वर परमात्मा ॥ध्रु. ॥ जड नोहे कुणां उपकारी
ग। परतंत्र (स्वार्थ) आत्म सहकारी ग। मी शक्तिनाथ संसारी ग।
जोंवरी विषयीं मी आत्मा, आत्मा (प्रकाश) न स्फुरे बाई। तोंवरीं
भोग सुख नाहीं ॥१॥ बोलणें, चालणे, रतिप्रेमा ग। जो भोग
विषयसुख महिमा ग। स्थिर मनीं प्रगटें मी आत्मा ग। मानसीं न
उजळे आत्मज्योति ही बाई। आनंद भोग सुख नाहीं ॥२॥
तामसरज सात्त्विक ज्या ऊर्मि। (ज्या तम रज सात्त्विक ऊर्मि)।
त्या निजानंद (चित्प्रकाश) सहज धर्मी। मी नित्य असंग अकामी।
त्यागुनी विषय, भज चिन्मार्ताड सुखात्मा। तो सत्य नेई निजधामा
(नेईल ग निजधामा) ॥३॥